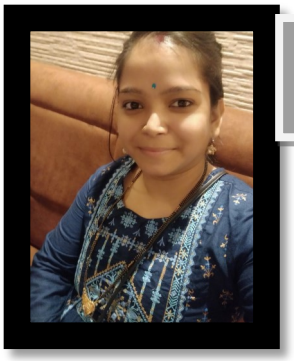

अंत्रिका सिंह

प्रयागराज, उत्तर प्रदेश

दुःखद

आज की तूफानी आंधी में
धराशाई हो गया फिर एक पेड़
बहुत ही पुराना और विशालकाय
जो था बिल्कुल तनिष्क के सामने
क्योंकि सड़क जाम थी
यातायात में रुकावट थी
तो लोग, पुलिस,प्रशासन सभी लग पड़े
रास्ता साफ करने के काम में
डाल, टहनी, लकड़ियों का तो कुछ पता न चला
कितनी जल्दी सब गायब हो गईं
हां बस जड़ का ही भारी हिस्सा बच गया
जो दिखा रहा था आपबीती पड़े रहकर किनारे
मैंने सोचा था,लोग दुखी होंगे
मगर हतप्रभ हुई यह देखकर कि
सब खुश थे, बहुत खुश
उन्हें बस दिख रहा था कि, अच्छा हुआ
पार्किंग की जगह ज्यादा हो गई
रास्ता खाली हो गया
सड़क चौंड़ी हो गई
दुकान लोगों को साफ दिखने लगी.....
पर किसी को नहीं दिखाई पड़ा कि, नहीं
अब बात पहले सी नहीं रह गई

हमने खोया है एक अमूल्य वृक्ष
बेहद पुराना, बेहद अनुभवी
जिसकी छांव बचाती थी तपती दोपहरी में
जिस पर न जाने कितने ही पक्षियों का बसेरा था
जिसकी ममतामयी गोद में होता सुखद सवेरा था
जिसकी शीतल बयार के आगे सब फीका था
जिसका हर एक फल रसभरा व बेहद मीठा था
नहीं दिखे किसी को छोटे छोटे बिखरे नीड़
न दिख पाए वे नन्हें नन्हें टूटे अंडे
पल रही थी कोई नन्हीं जान जिनके भीतर
दुःखद है, जहां हम सब
पेड़ के गिरने पर या कटने पर तो खुश होते हैं
वहीं दुखी हो जाते हैं थोड़ी ही देर के लिए
एसी बंद होने या बत्ती गुल हो जाने पर
अत्यधिक दुःखद है मानव की यह दीनहीन अवस्था
जो समझ ही नहीं पा रहा दौड़भाग की धुन में
कि,
क्या हमारे लिए जरूरी है,
क्या पाने की होड़ में अंधाधुंध दौड़ रहे हैं हम
और पीछे क्या कुछ छूट गया है,
क्या हम असल में खो रहे हैं,
अनजाने में या जानबूझकर।